Lord Shiv Sahasranama

भगवान् शिव सहस्रनाम (भावार्थ सहित)

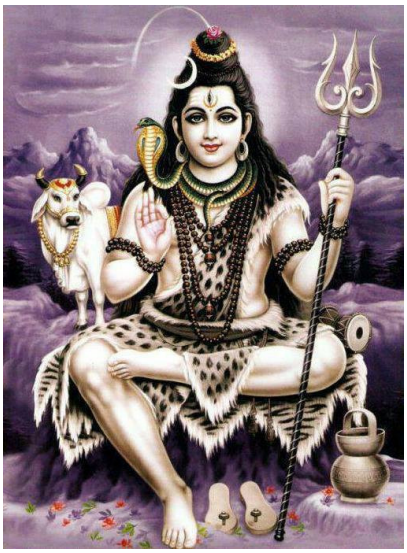

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

शिव सहस्त्रनाम अत्यन्त प्रभावी, पुण्यजनक एवं मंगलकारी स्तोत्र है जिसका त्रिकाल संध्या पाठ करने से मनुष्य की सर्वत्र उन्नति होती है एवं शिव का परम सान्निध्य प्राप्त होता है। शिव के 1000 सिद्धिदायक एवं परम पुण्यवर्द्धक नामों को भावार्थ सहित प्रस्तुत किया जा रहा है जिसके माध्यम से भगवान् शिव की सिद्धता, प्रभुता एवं असीमित शक्ति का ज्ञान प्राप्त होता है। साधक सामर्थ्यतानुसार प्रत्येक नाम से जप, तर्पण, अर्चन या हवन कर लाभार्जित कर सकता है।

जिसके मन में भगवान् शिव के नाम के प्रति कभी खण्डित न होने वाली असाधारण भक्ति प्रकट हुई है, उसी के लिये मोक्ष सुलभ है। जो अनेक पाप करके भी भगवान् शिव के नाम जप में आदरपूर्वक लग गया है, वह सर्व पापों से मुक्त होकर परमधाम को जाता है।

महादेव के साथ आरम्भ में उनके परिवार एवं मूर्तियों आदि की भी पूजा करें:-

अष्टमूर्तिः- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा तथा यजमान- ये भगवान् शंकर की आठ मूर्तियां कही गयी हैं। इन मूर्तियों के साथ शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, ईश्वर, महादेव तथा पशुपति- इन नामों का भी अर्चन करें।

शिव परिवारः- ईशान, नन्दी, चण्ड, महाकाल, भृंगी, वृष, स्कन्द, कपर्दीश्वर, सोम तथा शुक्र- ये दस शिव के परिवार हैं, जो क्रमशः ईशानादि दसों दिशाओं में पूजनीय हैं। तत्पश्चात् भगवान् शिव के समक्ष वीरभद्र का और पीछे कीर्तिमुख का पूजन करके ग्यारह रुद्रों की पूजा करें।

शिवमंत्र- 'ॐ नमः शिवाय।'

शिवामंत्र- 'ॐ नमः शिवायै।'

ध्यानम्- आद्यन्त मंगलम जातसमानभावमार्यं तमीशमजरामरमात्म देवम्। पंचाननं प्रबलपंचविनोदशीलं सम्भावये मनसि शंकरमम्बि केशम्।।

श्रीविष्णुरुवाच-

1-शिवः- कल्याणस्वरूप। 2-हरः- भक्तों के पाप ताप हरने वाले। 3-मृडः- सुखदाता। 4-रुद्रः- दुःख दूर करने वाले। 5-पुष्करः- आकाशस्वरूप। 6-पुष्पलोचनः- पुष्प के समान खिले हुए नेत्र वाले। 7-अर्थिगम्यः- प्रार्थियों को प्राप्त होने वाले। 8-सदाचारः- श्रेष्ठ आचारण वाले। 9-शर्वः- संहारकारी। 10-शम्भुः- कल्याण निकेतन। 11-महेश्वरः- महान् ईश्वर। 12-चन्द्रापीडः- चन्द्रमा को शिरोभूषण के रूप में धारण करने वाले। 13-चन्द्रमौलिः- सिर पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले। 14-विश्वम्- सर्वस्वरूप। 15-विश्वम्भेश्वरः- विश्व का भरण-पोषण करने वाले श्रीविष्णु के भी ईश्वर। 16-वेदान्तसारसंदोहः- वेदान्त के सारतत्त्व सच्चिदानन्दमय ब्रह्म की साकार मूर्ति। 17-कपाली- हाथ में कपाल धारण करने वाले। 18-नीललोहितः- गले में नील और शेष अंगों में लोहित वर्ण वाले। 19- ध्यानाधारः- ध्यान के आधार। 20-अपरिच्छेद्यः- देश, काल और वस्तु की सीमा से अविभाज्य। 21-गौरीभर्ताः- गौरी अर्थात् पार्वती के पति। 22-गणेश्वरः- प्रमथगणों के स्वामी। 23-अष्टमूर्तिः- जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य,

चन्द्रमा, पृथ्वी और यजमान- इन आठ रूपों वाले। 24-विश्वमूर्तिः- अखिल ब्रह्माण्डमय विराट् पुरुष। 25-त्रिवर्गस्वर्गसाधनः- धर्म, अर्थ, काम तथा स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाले। 26-ज्ञानगम्यः- ज्ञान से ही अनुभव में आने के योग्य। 27-दृढप्रज्ञः- सुस्थिर बुद्धिवाले। 28-देवदेवः- देवताओं के भी आराध्य। 29-त्रिलोचनः- सूर्य, चन्द्रमा और अग्निरूप तीन नेत्रों वाले। 30-वामदेवः- लोक के विपरित स्वभाव वाले देवता। 31-महादेवः- ब्रह्मादिकों के भी पूजनीय महान् देवता। 32-पटुः- सब कुछ करने में समर्थ एवं कुशल। 33-परिवृढः- स्वामी। 34-दृढः- कभी विचलित न होने वाले। 35-विश्वरूपः- जगत्स्वरूप। 36-विरूपाक्षः- विकट नेत्र वाले। 37-वागीशः- वाणी के अधिपति। 38-शुचिसत्तमः- पवित्र पुरुषों में भी सबसे श्रेष्ठ। 39-सर्वप्रमाणसंवादीः- सम्पूर्ण प्रमाणों में सामंजस्य स्थापित करने वाले। 40-वृषांकः- अपनी ध्वजा में वृषभ का चिह्न धारण करने वाले। 41-वृषवाहनः- वृषभ या धर्म रूपी वाहन धारण करने वाले। 42-ईशः- स्वामी या शासक। 43-पिनाकी- पिनाक नामक धनुष धारण करने वाले। 44-खटवांगी- खाट के पाये की आकृति का एक आयुध धारण करने वाले। 45-चित्रवेषः- विचित्र वेषधारी। 46-चिरंतनः- पुराण

अनादि पुरुषोत्तम। 47-तमोहरः- अज्ञानान्धकार को दूर करने वाले। 48-महायोगी- महान् योग से सम्पन्न। 49-गोप्ता- रक्षक। 50-ब्रह्मा- सृष्टिकर्ता। 51-धूर्जटिः- जटा के भार से युक्त। 52-कालकालः- काल के भी काल। 53-कृत्तिवासाः- गजासुर के चर्म को वस्त्र के रूप में धारण करने वाले। 54-सुभगः- सौभाग्यशाली। 55-प्रणवात्मकः- ओंकार स्वरूप अथवा प्रणव के वाच्यार्थ। 56-उन्नध्रः- बन्धनरहित। 57-पुरुषः- अन्तर्यामी आत्मा। 58- जुष्यः- सेवन करने योग्य। 59-दुर्वासाः- दुर्वासा नामक मुनि के रूप में अवतीर्ण। 60-पुरशासनः- तीन मायामय असुरपुरों का दमन करने वाले। 61-दिव्यायुधः- पाशुपत आदि दिव्यास्त्र धारण करने वाले। 62-स्कन्दगुरुः- कार्तिकेयजी के गुरु। 63-परमेष्ठी- अपनी प्रकृष्ट महिमा में स्थित रहने वाले। 64-परात्परः- कारण के भी कारण। 65-अनादिमध्यनिधनः- आदि, मध्य और अन्त से रहित। 66-गिरिशः- कैलास के अधिपति। 67-गिरिजाधवः- पार्वती के पति। 68-कुबेरबन्धुः- कुबेर को अपना बन्धु मानने वाले। 69-श्रीकण्ठः- श्यामसुषमा से सुशोभित कण्ठवाले। 70-लोकवर्णोत्तमः- समस्त लोकों और वर्णों से श्रेष्ठ। 71-मृदुः-

कोमल स्वभाव वाले। 72-समाधिवेद्यः- समाधि अथवा चित्तवृत्तियों के निरोध से अनुभव में आने योग्य। 73-कोदण्डी- धनुर्धर। 74-नीलकण्ठः- कण्ठ में हालाहल विष का नील चिह्न धारण करने वाले। 75-परश्वधी- परशुधारी। 76-विशालाक्षः- बड़े-बड़े नेत्रों वाले। 77-मृगव्याधः- वन में व्याध या किरात के रूप में प्रकट हो शूकर के ऊपर बाण चलाने वाले। 78-सुरेशः- देवताओं के स्वामी। 79-सूर्यतापनः- सूर्य को भी दण्ड देने वाले। 80-धर्मधाम- धर्म के आश्रय। 81-क्षमाक्षेत्रम्- क्षमा के उत्पत्ति स्थान। 82-भगवान्- सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा वैराग्य के आश्रय। 83-भगनेत्रभित्- भगदेवता के नेत्र का भेदन करने वाले। 84-उग्रः- संहारकाल में भयंकर रूप धारण करने वाले। 85-पशुपतिः- मायारूप में बंधे हुए पाशबद्ध पशुओं (जीवों) को तत्वज्ञान के द्वारा मुक्त करके यथार्थरूप से उनका पालन करने वाले। 86-तार्क्ष्यः- गरुड़रूप। 87-प्रियभक्तः- भक्तों से प्रेम करने वाले। 88-परंतपः- शत्रुता रखने वालों को संताप देने वाले। 89-दाता- दानी। 90-दयाकरः- दयानिधान अथवा कृपा करने वाले। 91-दक्षः- कुशल। 92-कपर्दी- जटाजूटधारी। 93-कामशासनः- कामदेव का दमन करने वाले। 94-श्मशाननिलयः- श्मशानवासी।

95-सूक्ष्मः- इन्द्रियातीत एवं सर्वव्यापी। 96-श्मशानस्थः- श्मशानभूमि में विश्राम करने वाले। 97-महेश्वरः- महान् ईश्वर या परमेश्वर। 98-लोककर्ता- जगत् की सृष्टि करने वाले। 99-मृगपतिः- मृग के पालक या पशुपति। 100-महाकर्ता- विराट् ब्रह्माण्ड की सृष्टि करने के समय महान् कर्तृत्व से सम्पन्न। 101-महौषधिः- भवरोग का निवारण करने के लिये महान् औषधिरूप। 102-उत्तरः- संसार सागर से पार उतारने वाले। 103-गोपतिः- स्वर्ग, पृथ्वी, पशु, वाणी, किरण, इन्द्रिय और जल के स्वामी। 104-गोप्ता- रक्षक। 105-ज्ञानगम्यः- तत्त्वज्ञान के द्वारा ज्ञानस्वरूप से ही जानने योग्य। 106-पुरातनः- सबसे पुराने। 107-नीतिः- न्यायस्वरूप। 108-सुनीतिः- उत्तम नीतिवाले। 109-शुद्धात्मा- विशुद्ध आत्मस्वरूप। 110-सोमः- उमासहित। 111-सोमरतः- चन्द्रमा पर प्रेम रखने वाले। 112-सुखी- आत्मानन्द से परिपूर्ण। 113-सोमपः- सोमपान करने वाले अथवा सोमनाथरूप से चन्द्रमा के पालक। 114-अमृतपः- समाधि के द्वारा स्वरूपभूत अमृत का आस्वादन करने वाले। 115-सौम्यः- भक्तों के लिये सौम्यरूपधारी। 116-महातेजाः- महान् तेज से सम्पन्न। 117-महाद्युतिः- परमकान्तिमान्। 118-तेजोमयः- प्रकाशस्वरूप।

119-अमृतमयः- अमृतरूप। 120-अन्नमयः- अन्नरूप। 121-सुधापतिः- अमृत के पालक। 122-अजातशत्रुः- जिनके मन में कभी किसी के प्रति शत्रुताभा पैदा नहीं हुआ। 123-आलोकः- प्रकाशस्वरूप। 124-सम्भाव्यः- सम्मानीय। 125-हव्यवाहनः- अग्निस्वरूप। 126-लोककरः- जगत् के स्रष्टा। 127-वेदकरः- वेदों को प्रकट करने वाले। 128-सूत्रकारः- ढक्कानाद के रूप में चतुर्दश माहेश्वर सूत्रों के प्रणेता। 129-सनातनः- नित्यस्वरूप। 130-महर्षिकपिलाचार्यः- सांख्याशास्त्र के प्रणेता भगवान् कपिलाचार्य। 131-विश्वदीप्तिः- अपनी प्रभा से सबको प्रकाशित करने वाले। 132-त्रिलोचनः- तीनों लोकों के द्रष्टा। 133-पिनाकपाणिः- हाथ में पिनाक नामक धनुष धारण करने वाले। 134-भूदेवः- पृथ्वी के देवता ब्राह्मण अथवा पार्थिवलिंगरूप। 135-स्वस्तिदः- कल्याणदाता। 136-स्वस्तिकृत्- कल्याणकारी। 137-सुधीः- विशुद्ध बुद्धि वाले। 138-धातृधामा- विश्व को धारण पोषण करने में समर्थ तेज वाले। 139-धामकरः- तेज की सृष्टि करने वाले। 140-सर्वगः- सर्वव्यापी। 141-सर्वगोचरः- सब में व्याप्त। 142-ब्रह्मसृक्- ब्रह्माजी के उत्पादक। 143-विश्वसृक्- जगत् के स्रष्टा। 144-सर्गः- सृष्टिस्वरूप। 145-कर्णिकारप्रियः- कनेर के फूल

को पसंद करने वाले। 146-कविः- त्रिकालदर्शी। 147-शाखः- कार्तिकेय के छोटे भाई शाखस्वरूप। 148-विशाखः- स्कन्द के छोटे भाई विशाखस्वरूप अथवा विशाख नामक ऋषि। 149-गोशाखः- वेदवाणी की शाखाओं का विस्तार करने वाले। 150-शिवः- मंगलमय। 151-भिषगनुत्तमः- भवरोग का निवारण करने वाले वैद्यों (ज्ञानियों) में सर्वश्रेष्ठ। 152-गंगाप्लवोदकः- गंगा के प्रवाहरूप जल को सिर पर धारण करने वाले। 153-भव्यः- कल्याणस्वरूप। 154-पुष्कलः- पूर्णतम अथवा व्यापक। 155-स्थपतिः- ब्रह्माण्डरूपी भवन के निर्माता। 156-स्थिरः- अचंचल अथवा स्थाणुरूप। 157-विजितात्मा- मन को वश में रखने वाले। 158-विधेयात्मा- शरीर, मन और इन्द्रियों से अपनी इच्छा के अनुसार काम लेने वाले। 159-भूतवाहनसारथिः- पांचभौतिक रथ (शरीर) का संचालन करने वाले बुद्धिरूप सारथि। 160-सगणः- प्रमथगणों के साथ रहने वाले। 161-गणकायः- गणस्वरूप। 162-सुकीर्तिः- उत्तम कीर्तिवाले। 163-छिन्नसंशयः- संशयों को काट देने वाले। 164-कामदेवः- मनुष्यों द्वारा अभिलिषत समस्त कामनाओं के अधिष्ठाता परमदेव। 165-कामपालः- सकाम भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले। 166-भस्मोद्धूलितविग्रहः- अपने

श्रीअंगों में भस्म रमाने वाले। 167-भस्मप्रियः- भस्म के प्रेमी। 168-भस्मशायी- भस्म पर शयन करने वाले। 169-कामी- अपने प्रिय भक्तों को चाहने वाले। 170-कान्तः- परम कमनीय प्राणवल्लभरूप। 171-कृतागमः- समस्त तंत्रशास्त्रों के रचियता। 172-समावर्तः- संसारचक्र को भली भांति घुमाने वाले। 173-अनिवृत्तात्मा- सर्वत्र विद्यमान होने के कारण जिनकी आत्मा कहीं से भी हटी नहीं है। 174-धर्मपुंजः- धर्म या पुण्य की राशि। 175-सदाशिवः- निरन्तर कल्याणकारी। 176-अकल्मषः- पापरहित। 177-चतुर्बाहुः- चार भुजाधारी। 178-दुरावासः- जिन्हें योगीजन भी बड़ी कठिनाई से अपने हृदयमन्दिर में बसा पाते हैं। 179-दुरासदः- परम दुर्जय। 180-दुर्लभः- भक्तिहीन पुरुषों को कठिनता से प्राप्त होने वाले। 181-दुर्गमः- जिनके निकट पहुंचना किसी के लिये भी कठिन है। 182-दुर्गः- पाप-ताप से रक्षा करने के लिये दुर्गरूप अथवा दुर्ज्ञेय। 183-सर्वायुधविशारदः- सम्पूर्ण अस्त्रों के प्रयोग की कला में कुशल। 184-अध्यात्म-योगनिलयः- अध्यात्मयोग में स्थित। 185-सुतन्तुः- सुन्दर विस्तृत जगत्रूप तंतु वाले। 186-तंतुवर्धनः- जगत्-रूप तंतु को बढ़ाने वाले। 187-शुभांगः- सुन्दर अंगों वाले। 188-लोकसारंगः- लोकसारग्राही।

189-जगदीशः- जगत् के स्वामी। 190-जनार्दनः- भक्तजनों की याचना के आलम्बन। 191-भस्मशुद्धिकरः- भस्म के शुद्धि का सम्पादन करने वाले। 192-मेरुः- सुमेरु पर्वत के समान केन्द्ररूप। 193-ओजस्वी- तेज और बल से सम्पन्न। 194-शुद्धविग्रहः- निर्मल शरीर वाला। 195-असाध्यः- साधन-भजन से दूर रहने वाले लोगों के लिये अलभ्य। 196-साधुसाध्यः- साधन भजन परायण सत्पुरुषों के लिये साध्य। 197-भृत्यमर्कटरूपधृक्- श्रीराम के सेवक वानर हनुमान् का रूप का धारण करने वाले। 198-हिरण्यरेताः- अग्निस्वरूप अथवा सुवर्णमय वीर्यवाले। 199-पौराणः- पुराणों द्वारा प्रतिपादित। 200-रिपुजीवहरः- शत्रुओं के प्राण हर लेने वाले। 201-बली- बलशाली। 202-महाह्रदः- परमानन्द के महान् सरोवर। 203-महागर्तः- महान् आकाशरूप। 204-सिद्धवृन्दारवन्दितः- सिद्धों और देवताओं द्वारा वन्दित। 205-व्याघ्रचर्माम्बरः- व्याघ्रचर्म को वस्त्र के समान धारण करने वाले। 206-व्याली- सर्पों को आभूषण की भांति धारण करने वाले। 207-महाभूतः- त्रिकाल में भी कभी नष्ट न होने वाले महाभूतस्वरूप। 208-महानिधिः- सब के महान् निवासस्थान।

209-अमृताशः- जिनकी आशा कभी विफल न हो ऐसे अमोघसंकल्प। 210-अमृतवपुः- जिनका कलेवर कभी नष्ट न हो ऐसे-नित्यविग्रह। 211-पांचजन्यः- पांचजन्य नामक शंखस्वरूप। 212-प्रभंजनः- वायुस्वरूप अथवा संहारकारी। 213-पंचविंशतितत्त्वस्थः- प्रकृति, महत्तत्त्व (बुद्धि), अंहकार, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना, त्वक्, वाक्, पाणि, पायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश- इन चौबीस जड़ तत्त्वों सहित पचीसवें चेतनतत्त्वपुरुष में व्याप्त। 214-पारिजातः- याचकों की इच्छा पूर्ण करने में कल्पवृक्षरूप। 215-परावरः- कारण-कार्यरूप। 216-सुलभः- नित्य निरन्तर चिंतन करने वाले एकनिष्ठ श्रद्धालु भक्त को सुगमता से प्राप्त होने वाले। 217-सुव्रतः- उत्तमव्रतधारी। 218-शूरः- शौर्यसम्पन्न। 219-ब्रह्मवेदनिधिः- ब्रह्मा और वेद के प्रादुर्भाव के स्थान। 220-निधिः- जगत्रूपी रत्न के उत्पत्तिस्थान। 221-वर्णाश्रमगुरुः- वर्णों और आश्रमों के गुरु। 222-वर्णी- ब्रह्मचारी। 223-शत्रुजित्- अंधकासुर आदि शत्रुओं को जीतने वाले। 224-शत्रुतापनः- शत्रुओं को संताप देने वाले। 225-आश्रमः- सबके विश्रामस्थान। 226-क्षपणः- जन्म-मरण

के कष्ट का मूलोच्छेद करने वाले। 227-क्षामः- प्रलयकाल में प्रजा को क्षीण करने वाले। 228-ज्ञानवान्- ज्ञानी। 229-अचलेश्वरः- पर्वतों अथवा स्थावर पदार्थों के स्वामी। 230-प्रमाणभूतः- नित्यसिद्ध प्रमाणरूप। 231-दुर्ज्ञेयः- कठिनता से जानने योग्य। 232-सुपर्णः- वेदमय सुन्दर पंखवाले गरुड़रूप। 233-वायुवाहनः- अपने भय से वायु को प्रवाहित करने वाले। 234-धनुर्धरः- पिनाकधारी। 235-धनुर्वेदः- धनुर्वेद के ज्ञाता। 236-गुणराशिः- अनन्त कल्याणमय गुणों की राशि। 237-गुणाकरः- सद्गुण स्वरूप। 238-सत्यः- सत्यस्वरूप। 239-सत्यपरः- सत्यपरायण। 240-अदीनः- दीनता से रहित- उदार। 241-धर्मांगः- धर्ममय विग्रह वाले। 242-धर्मसाधनः- धर्म का अनुष्ठान करने वाले। 243-अनन्तदृष्टिः- असीमित दृष्टि वाले। 244-आनन्दः- परमानन्दमय। 245-दण्डः- दुष्टों को दण्ड देने वाले अथवा दण्डस्वरूप। 246-दमयिता- दुर्दान्त दानवों का दमन करने वाले। 247-दमः- दमनस्वरूप। 248-अभिवाद्यः- प्रणाम करने योग्य। 249-महामायः- मायावियों को भी मोहने वाले महामायावी। 250-विश्वकर्मविशारदः- संसार की सृष्टि करने में कुशल। 251-वीतरागः- पूर्णतया विरक्त।

252-विनीतात्मा- मन से विनयशील अथवा मन को वश में रखनेवाले। 253-तपस्वी- तपस्यापरायण। 254-भूतभावनः- सम्पूर्ण भूतों के उत्पादक एवं रक्षक। 255-उन्मत्तवेषः- पागलों के समान वेष धारण करने वाले। 256-प्रच्छन्नः- माया के पर्दे में छिपे हुए। 257-जितकामः- कामविजयी। 258-अजितप्रियः- भगवान् विष्णु के प्रेमी। 259-कल्याणप्रकृतिः- कल्याणकारी स्वभाव वाले। 260-कल्पः- समर्थ। 261-सर्वलोकप्रजापतिः- सम्पूर्ण लोकों की प्रजा के पालक। 262-तरस्वी- वेगशाली। 263-तारकः- उद्धारक। 264-धीमान्- विशुद्ध बुद्धि से युक्त। 265-प्रधानः- सबसे श्रेष्ठ। 266-प्रभुः- सर्वसमर्थ। 267-अव्ययः- अविनाशी। 268-लोकपालः- समस्त लोकों की रक्षा करने वाले। 269-अन्तर्हितात्माः- अन्तर्यामी आत्मा अथवा अदृश्य स्वरूप वाले। 270-कल्पादिः- कल्प के आदि कारण। 271-कमलेक्षणः- कमल के समान नेत्रवाले। 272-वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः- वेदों और शास्त्रों के अर्थ एवं तत्त्व को जानने वाले। 273-अनियमः- नियंत्रणरहित। 274-नियताश्रयः- सबके सुनिश्चित आश्रयस्थान। 275-चन्द्रः- चन्द्रमारूप से आह्लादकारी। 276-सूर्यः- सबकी उत्पत्ति के हेतुभूत सूर्य। 277-शनिः- शनिस्वरूप। 278-केतुः- केतुस्वरूप।

279-वरांगः- सुन्दर शरीर वाले। 280-विद्रुमच्छविः- मूंगे की सी लाल कान्ति वाले। 281-भक्तिवश्यः- भक्ति के द्वारा भक्त के वश में होने वाले। 282-परब्रह्म- परमात्मा। 283-मृगबाणार्पणः- मृगरूपधारी यज्ञ पर बाण चलाने वाले। 284-अनघः- पापरहित। 285-अद्रिः- कैलास आदि पर्वतस्वरूप। 286-अद्र्यालयः- कैलास और मन्दर आदि पर्वतों पर निवास करने वाले। 287-कान्तः- सबके प्रियतम्। 288-परमात्मा- परब्रह्म परमेश्वर। 289-जगद्गुरुः- समस्त संसार के गुरु। 290-सर्वकर्मालयः- सम्पूर्ण कर्मों के आश्रयस्थान। 291-तुष्टः- सदा प्रसन्न। 292-मंगल्यः- मंगलकारी। 293-मंगलावृतः- मंगलकारिणी शक्ति से संयुक्त। 294-महातपाः- महान् तपस्वी। 295-दीर्घतपाः- दीर्घकाल तक तप करने वाले। 296-स्थविष्ठः- अत्यन्त स्थूल। 297-स्थविरो ध्रुवः- अति प्राचीन एवं अत्यन्त स्थिर। 298-अहःसंवत्सरः- दिन एवं संवत्सर आदि कालरूप से स्थित अंश कालस्वरूप। 299-व्याप्तिः- व्यापकतास्वरूप। 300-प्रमाणम्- प्रत्यक्षादि प्रमाणस्वरूप। 301-परमं तपः- उत्कृष्ट तपस्या स्वरूप। 302-संवत्सरकरः- संवत्सर आदि कालविभाग के उत्पादक। 303-मंत्रप्रत्ययः- वेद आदि मंत्रों से प्रतीत होने

योग्य। 304-सर्वदर्शनः- सबके के साक्षी। 305-अजः- अजन्मा। 306-सर्वेश्वरः- सबके शासक। 307-सिद्धः- सिद्धियों के आश्रय। 308-महारेताः- श्रेष्ठ वीर्य वाले। 309-महाबलः- प्रमथगणों की महती सेना से सम्पन्न। 310-योगी योग्यः- सुयोग्य योगी। 311-महातेजाः- महान् तेज से सम्पन्न। 312-सिद्धिः- समस्त साधनों के फल। 313-सर्वादिः- सब भूतों के आदिकारण। 314-अग्रहः- इन्द्रियों की ग्रहण शक्ति के अविषय। 315-वसुः- सब भूतों के वासस्थान। 316-वसुमनाः- उदार मन वाले। 317-सत्यः- सत्यस्वरूप। 318-सर्वपापहरो हरः- समस्त पापों का अपहरण करने के कारण हर नाम से प्रसिद्ध। 319-सुकीर्तिशोभनः- उत्तम कीर्ति से सुशोभित होने वाले। 320-श्रीमान्- विभूतिस्वरूपा उमा से सम्पन्न। 321-वेदांगः- वेदरूप अंगों वाले। 322-वेदविन्मुनिः- वेदों का विचार करने वाले मननशील मुनि। 323-भ्राजिष्णुः- एकरस प्रकाशस्वरूप। 324-भोजनम्- ज्ञानियों द्वारा भोगने योग्य अमृतस्वरूप। 325-भोक्ता- पुरुषरूप से उपभोग करने वाले। 326-लोकनाथः- भगवान् विश्वनाथ। 327-दुराधरः- अजितेन्द्रिय पुरुषों द्वारा जिनकी आराधना अत्यन्त कठिन है। 328-अमृतः शाश्वतः- सनातन अमृतस्वरूप। 329-शान्तः- शान्तिमय।

330-बाणहस्तः प्रतापवान्- हाथ में बाण धारण करने वाले प्रतापी वीर। 331-कमण्डलुधरः- कमण्डलु धारण करने वाले। 332-धन्वी- पिनाकधारी। 333-अवाङ्मनसगोचरः- मन और वाणी के अविषय। 334-अतीन्द्रियो महामायः- इन्द्रियातीत एवं महामायावी। 335-सर्वावासः- सबके वासस्थान। 336-चतुष्पथः- चारों पुरुषार्थों की सिद्धि के एक मात्र मार्ग। 337-कालयोगी- प्रलय के समय सबको काल से संयुक्त करने वाले। 338-महानादः- गम्भीर शब्द करने वाले अथवा अनाहत नादरूप। 339-महोत्साहो महाबलः- महान् उत्साह और बल से सम्पन्न। 340-महाबुद्धिः- श्रेष्ठ बुद्धिवाले। 341-महावीर्यः- अनन्त पराक्रमी। 342-भूतचारी- भूतगणों के साथ विचरण वाले। 343-पुरंदरः- त्रिपुरसंहारक। 344-निशाचरः- रात्रि में विचरण करने वाले। 345-प्रेतचारी- प्रेतों के साथ भ्रमण करने वाले। 346-महाशक्तिर्महाद्युतिः- अनन्त शक्ति एवं श्रेष्ठ कान्ति से सम्पन्न। 347-अनिर्देश्यवपुः- अनिर्वचनीय स्वरूप वाले। 348-श्रीमान्- ऐश्वर्यवान्। 349-सर्वाचार्यमनोगतिः- सबके लिये अविचार्य मनोगतिवाले। 350-बहुश्रुतः- बहुज्ञ अथवा सर्वज्ञ। 351-अमहामायः- बड़ी से बड़ी माया भी जिन पर प्रभाव नहीं

डाल सकती। 352-नियतात्मा- मन को वश में रखने वाले। 353-ध्रुवोऽध्रुवः- ध्रुव (नित्य कारण) और अध्रुव (अनित्यकार्य) रूप। 354-ओजस्तेजोद्युतिधरः- ओज (प्राण और बल) तेज (शौर्य आदि गुण) तथा ज्ञान की दीप्ति को धारण करने वाले। 355-जनकः- सबके उत्पादक। 356-सर्वशासनः- सबके शासक। 357-नृत्यप्रियः- नृत्य के प्रेमी। 358-नित्यनृत्यः- प्रतिदिन ताण्डव नृत्य करने वाले। 359-प्रकाशात्मा- प्रकाशस्वरूप। 360-प्रकाशकः- सूर्य आदि को भी प्रकाश देने वाले। 361-स्पष्टाक्षरः- ओंकाररूप स्पष्ट अक्षर वाले। 362-बुधः- ज्ञानवान्। 363-मंत्रः- ऋक्, साम और यजुर्वेद के मंत्रस्वरूप। 364-समानः- सबके प्रति समान भाव रखने वाले। 365-सारसम्प्लवः- संसार सागर से पार होने के लिये नौकारूप। 366-युगादिकृद्युगावर्तः- युगादि का आरम्भ करने वाले तथा चारों युगों को चक्र की तरह घुमाने वाले। 367-गम्भीरः- गाम्भीर्य ये युक्त। 368-वृषवाहनः- नन्दी नामक वृषभ पर सवार होने वाले। 369-इष्टः- परमानन्दस्वरूप होने से प्रिय। 370-अविशिष्टः- सम्पूर्ण विशेषणों से रहित। 371-शिष्टेष्टः- शिष्ट पुरुषों के इष्टदेव। 372-सुलभः- अनन्यचित्त से निरन्तर स्मरण करने वाले वाले भक्तों के लिये सुगमता से प्राप्त होने

योग्य। 373-सारशोधनः- सारतत्त्व की खोज करने वाले। 374-तीर्थरूपः- तीर्थस्वरूप। 375-तीर्थनामा- तीर्थनामधारी अथवा जिनका नाम भवसागर से पार लगाने वाला है। 376-तीर्थदृश्यः- तीर्थसेवन से अपने स्वरूप का दर्शन कराने वाले अथवा गुरु कृपा से प्रत्यक्ष होने वाले। 377-तीर्थदः- चरणोदक स्वरूप तीर्थ को देने वाले। 378-अपांनिधिः- जल के निधान समुद्ररूप। 379-अधिष्ठानम्- उपादान कारणरूप से सब भूतों के आश्रय अथवा जगत्रूप प्रपंच के अधिष्ठान। 380-दुर्जयः- जिनको जीतना कठिन है। 381-जयकालवित्- विजय के अवसर को समझने वाले। 382-प्रतिष्ठितः- अपनी महिमा में स्थित। 383-प्रमाणज्ञः- प्रमाणों के ज्ञाता। 384-हिरण्यकवचः- सुवर्णमय कवच धारण करने वाले। 385-हरिः- श्रीहरिस्वरूप। 386-विमोचनः- संसारबंधन से सदा के लिये छुड़ा देने वाले। 387-सुरगणः- देवसमुदायस्वरूप। 388-विद्येशः- सम्पूर्ण विद्याओं के स्वामी। 389-विंदुसंश्रयः- बिन्दुरूप प्रणव के आश्रय। 390-बालरूपः- बालक का रूप धारण करने वाले। 391-अबलोन्मत्तः- बल से उन्मत्त न होने वाले। 392-अविकर्ता- विकाररहित। 393-गहनः- दुर्बोधस्वरूप या अगम्य। 394-गुहः- माया से अपने यथार्थ स्वरूप को

छिपाये रखने वाले। 395-करणम्- संसार की उत्पत्ति के सबसे बड़े साधन। 396-कारणम्- जगत् के उपादान और निमित्त कारण। 397-कर्ता- सबके रचियता। 398-सर्वबंधविमोचनः- सम्पूर्ण बंधनों से छुड़ाने वाले। 399-व्यवसायः- निश्चयात्मक ज्ञानस्वरूप। 400-व्यवस्थानः- सम्पूर्ण जगत् की व्यवस्था करने वाले। 401-स्थानदः- ध्रुव आदि भक्तों का अविचल स्थिति प्रदान करने वाले। 402-जगदादिजः- हिरण्यगर्भरूप से जगत् के आदि में प्रकट होने वाले। 403-गुरुदः- श्रेष्ठ वस्तु प्रदान करने वाले अथवा जिज्ञासुओं को गुरु की प्राप्ति कराने वाले। 404-ललितः- सुन्दर स्वरूप वाले। 405-अभेदः- भेदरहित। 406-भावात्माऽऽत्मनि संस्थितः- सत्स्वरूप आत्मा में प्रतिष्ठित। 407-वीरेश्वरः- वीरशिरोमणि। 408-वीरभद्रः- वीरभद्र नामक गणाध्यक्ष। 409-वीरासनविधिः- वीरासन से बैठने वाले। 410-विराट्- अखिलब्रह्माण्डस्वरूप। 411-वीरचूडामणिः- वीरों में श्रेष्ठ। 412-वेत्ता- विद्वान्। 413-चिदानन्दः- विज्ञानानन्दस्वरूप। 414-नदीधरः- मस्तक पर गंगाजी को धारण करने वाले। 415-आज्ञाधारः- आज्ञा का पालन करने वाले। 416-त्रिशूली- त्रिशूलधारण करने वाले। 417-शिपिविष्टः- तेजोमयी किरणों से व्याप्त। 418-शिवालयः- भगवती शिवा के

आश्रय। 419-वालखिल्यः- वालखिल्य ऋषिरूप। 420-महाचापः- महान् धनुर्धर। 421-तिग्मांशुः- सूर्यरूप। 422-बधिरः- लौकिक विषयों की चर्चा न सुनने वाले। 423-खगः- आकाशचारी। 424-अभिरामः- परम सुन्दर। 425-सुशरणः- सबके लिये सुन्दर आश्रयरूप। 426-सुब्रह्मण्यः- ब्राह्मणों के परम हितैषी। 427-सुधापतिः- अमृतकलश के रक्षक। 428-मघवान् कौशिकः- कुशिकवंशीय इन्द्रस्वरूप। 429-गोमान्- प्रकाशकिरणों से युक्त। 430-विरामः- समस्त प्राणियों के लय के स्थान। 431-सर्वसाधनः- समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाले। 432-ललाटाक्षः- ललाट में तीसरा नेत्र धारण करने वाले। 433-विश्वदेहः- जगत्स्वरूप। 434-सारः- सारतत्त्वरूप। 435-संसारचक्रभृत्- संसार चक्र को धारण करने वाले। 436-अमोघदण्डः- जिनका दण्ड कभी व्यर्थ नहीं जाता है। 437-मध्यस्थः- उदासीन। 438-हिरण्यः- सुवर्ण अथवा तेजःस्वरूप। 439-ब्रह्मवर्चसी- ब्रह्मतेज से सम्पन्न। 440-परमार्थः- मोक्षरूप उत्कृष्ट अर्थ की प्राप्ति कराने वाले। 441-परोमयी- महामायावी। 442-शम्बरः- कल्याणप्रद। 443-व्याघ्रलोचनः- व्याघ्र के समान भयानक नेत्रों वाले। 444-रुचिः- दीप्तिरूप। 445-विरन्चिः- ब्रह्मस्वरूप।

446-स्वर्बन्धुः- स्वर्लोक में बंधु के समान सुखद। 447-वाचस्पतिः- वाणी के अधिपति। 448-अहपर्तिः- दिन के स्वामी सूर्यरूप। 449-रविः- समस्त रसों का शोषण करने वाले। 450-विरोचनः- विविध प्रकार से प्रकाश फैलाने वाले। 451-स्कन्दः- स्वामी कार्तिकेयरूप। 452-शास्ता वैवस्वतो यमः- सब पर शासन करने वाले सूर्यकुमार यम। 453-युक्तिरुन्नतकीर्तिः- अष्टांगयोग स्वरूप तथा ऊर्ध्वलोक में फैली हुई कीर्ति से युक्त। 454-सानुरागः- भक्तजनों पर प्रेम रखने वाले। 455-परंजयः- दूसरों पर विजय पाने वाले। 456-कैलासाधिपतिः- कैलास के स्वामी। 457-कान्तः- कमनीय अथवा कान्तिमान्। 458-सविता- समस्त जगत् को उत्पन्न करने वाले। 459-रविलोचनः- सूर्यरूप नेत्रवाले। 460-विद्वत्तमः- विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ, परम विद्वान। 461-वीतभयः- सब प्रकार के भय से रहित। 462-विश्वभर्ता- जगत् का भरण-पोषण करने वाले। 463-अनिवारितः- जिन्हें कोई रोक नहीं सकता। 464-नित्यः- सत्यस्वरूप। 465-नियतकल्याणः- सुनिश्चित रूप से कल्याणकारी। 466- पुण्यश्रवणकीर्तनः- जिनके नाम, गुण, महिमा और स्वरूप के श्रवण तथा कीर्तन परम पावन हैं। 467-दूरश्रवाः- सर्वव्यापी होने के कारण दूर की बात भी सुन

लेने वाले। 468-विश्वसहः- भक्तजनों के सब अपराधों को कृपापूर्वक सह लेने वाले। 469-ध्येयः- ध्यान करने योग्य। 470-दुःस्वप्ननाशनः- चिन्तन करने मात्र से बुरे स्वप्नों को नाश करने वाले। 471-उत्तारणः- संसार सागर से पार उतारने वाले। 472-दुष्कृतिहा- पापों का नाश करने वाले। 473-विज्ञेयः- जानने के योग्य। 474-दुस्सहः- जिनके वेग को सहन करना दूसरों के लिये अत्यन्त कठिन है। 475-अभवः- संसार बंधन से रहित अथवा अजन्मा। 476-अनादिः- जिनका कोई आदि नहीं है। 477-भूर्भुवो लक्ष्मीः- भूर्लोक और भुवर्लोक की शोभा। 478-किरीटि- मुकुटधारी। 479-त्रिदशाधिपः- देवताओं के स्वामी। 480-विश्वगोप्ता- जगत् के रक्षक। 481-विश्वकर्ता- संसार की सृष्टि करने वाले। 482-सुवीरः- श्रेष्ठ वीर। 483-रुचिरांगदः- सुन्दर बाजूबंद धारण करने वाले। 484-जननः- प्राणिमात्र को जन्म देने वाले। 485-जनजन्मादिः- जन्म लेने वालों के जन्म के मूल कारण। 486-प्रीतिमान्- प्रसन्न। 487-नीतिमान्- सदा नीतिपरायण। 488- धवः- सबके स्वामी। 489-वसिष्ठः- मन और इन्द्रियों को अत्यन्त वश में रखने वाले अथवा वसिष्ठ ऋषिरूप। 490-कश्यपः- द्रष्टा अथवा कश्यप मुनिरूप। 491-भानुः-

प्रकाशमान अथवा सूर्यरूप। 492-भीमः- दुष्टों को भय देने वाले। 493-भीमपराक्रमः- अतिशय भयदायक पराक्रम से युक्त। 494-प्रणवः- ओंकारस्वरूप। 495-सत्पथाचारः- सत्पुरुषों के मार्ग पर चलने वाले। 496-महाकोशः- अन्नमयादि पांचों कोशों को अपने भीतर धारण करने के कारण महाकोशरूप। 497-महाधनः- अपरिमित ऐश्वर्यवाले अथवा कुबेर को भी धन देने के कारण महाधनवान्। 498-जन्माधिपः- जन्मरूपी कार्य के अध्यक्ष ब्रह्मा। 499-महादेवः- सर्वोत्कृष्ट देवता। 500-सकलागमपारगः- समस्त शास्त्रों के पारंगत विद्वान। 501-तत्त्वम्- यथार्थ तत्त्वरूप। 502-तत्त्ववित्- यथार्थ तत्त्व को पूर्णतया जानने वाले। 503-एकात्मा- अद्वितीय आत्मस्वरूप। 504-विभुः- सर्वत्र व्यापक। 505-विश्वभूषणः- सम्पूर्ण विश्व को उत्तम गुणों से विभूषित करने वाले। 506-ऋषिः- मंत्रद्रष्टा। 507-ब्राह्मणः- ब्रह्मवेत्ता। 508-ऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगः- ऐश्वर्य, जन्म, मृत्यु और जरा से अतीत। 509-पंचयज्ञसमुत्पत्तिः- पंचमहायज्ञों की उत्पत्ति के हेतु। 510-विश्वेशः- विश्वनाथ। 511-विमलोदयः- निर्मल अभ्युदय की प्राप्ति कराने वाले धर्मरूप। 512-आत्मयोनिः- स्वयम्भू। 513-अनाद्यन्तः- आदि अन्त से रहित। 514-वत्सलः- भक्तों

के प्रति वात्सल्य स्नेह से युक्त। 515-भक्तलोकधृक्:- भक्तजनों के आश्रय। 516-गायत्रीवल्लभः- गायत्री मंत्र के प्रेमी। 517-प्रांशुः- ऊंचें शरीर वाले। 518-विश्वावासः- सम्पूर्ण जगत् के आवासस्थान। 519-प्रभाकरः- सूर्यरूप। 520-शिशुः- बालकरूप। 521-गिरिरतः- कैलास पर्वत पर रमण करने वाले। 522-सम्राट- देवेश्वरों के भी ईश्वर। 523-सुषेणः सुरशत्रुहा- प्रमथगणों की सुन्दर सेना से युक्त तथा देवशत्रुओं का संहार करने वाले। 524-अमोघोऽरिष्टनेमिः- अमोघ संकल्प वाले महर्षि कश्यपरूप। 525-कुमुदः- भूतल को आह्लाद प्रदान करने वाले चन्द्रमारूप। 526-विगतज्वरः- चिंतारहित। 527-स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिः- अपने ही प्रकाश से प्रकाशित होने वाले सूक्ष्मज्योतिःस्वरूप। 528-आत्मज्योतिः- अपने स्वरूपभूत ज्ञान की प्रभा से प्रकाशित। 529-अचंचलः- चंचलता से रहित। 530-पिंगलः- पिंगलवर्ण वाले। 531-कपिलश्मश्रुः- कपिल वर्ण की दाढ़ी मूंछ रखने वाले दुर्वासा मुनि के रूप में अवतीर्ण। 532-भालनेत्रः- ललाट में तृतीय नेत्र धारण करने वाले। 533-त्रयीतनुः- तीनों लोक या तीनों वेद जिनके स्वरूप हैं। 534-ज्ञानस्कन्दो महानीतिः- ज्ञानप्रद और श्रेष्ठ नीतिवाले। 535-विश्वोत्पत्तिः- जगत् के उत्पादक। 536-उपप्लवः-

संहारकारी। 537-भगो विवस्वानादित्यः- अदितिनन्दन भग एवं विवस्वान्। 538-योगपारः- योगविद्या में पारंगत। 539-दिवस्पतिः- स्वर्गलोक के स्वामी। 540-कल्याणगुणनामा- कल्याणकारी गुण और नाम वाले। 541-पापहा- पापनाशक। 542-पुण्यदर्शनः- पुण्यजनक दर्शनवाले अथवा पुण्य से ही जिनका दर्शन होता है। 543-उदारकीर्तिः- उत्तम कीर्तिवाले। 544-उद्योगी- उद्योगशील। 545-सद्योगी- श्रेष्ठ योगी। 546-सदसन्मयः- सदसत्स्वरूप। 547-नक्षत्रमाली- नक्षत्रों की माला से अलंकृत आकाशरूप। 548-नाकेशः- स्वर्ग के स्वामी। 549-स्वाधिष्ठानपदाश्रयः- स्वाधिष्ठान चक्र के आश्रय। 550-पवित्रः पापहारी- नित्य शुद्ध एवं पापनाशक। 551-मणिपुरः- मणिपुर नामक चक्रस्वरूप। 552-नभोगतिः- आकाशचारी। 553-हृत्पुण्डरीकमासीनः- हृदयकमल में स्थित। 554-शक्रः- इन्द्ररूप। 555-शान्तः- शान्तस्वरूप। 556-वृषाकपिः- हरिहर। 557-उष्णः- हालाहल विष की गर्मी से उष्णायुक्त। 558-गृहपतिः- समस्त ब्रह्माण्डरूपी गृह के स्वामी। 559-कृष्णः- सच्चिदानन्दस्वरूप। 560-समर्थः- सामर्थ्यशाली। 561-अनर्थनाशनः- अनर्थ का नाश करने वाले। 562-अधर्मशत्रुः- अधर्मनाशक। 563-अज्ञेयः- बुद्धि की पंहुच से

परे अथवा जानने में न आने वाले। 564-पुरुहूतः पुरुश्रुतः- बहुत से नामों द्वारा पुकारे और सुने जाने वाले। 565- ब्रह्मगर्भः- ब्रह्मा जिनके गर्भस्थ शिशु के समान है। 566-बृहदगर्भः- विश्वब्रह्माण्ड प्रलयकाल में जिनके गर्भ में रहता है। 567-धर्मधेनुः- धर्मरूपी वृषभ को उत्पन्न करने के लिये धेनुस्वरूप। 568-धनागमः- धन की प्राप्ति कराने वाले। 569-जगद्धितैषी- समस्त संसार का हित चाहने वाले। 570-सुगतः- उत्तम ज्ञान से सम्पन्न अथवा बुद्धस्वरूप। 571-कुमारः- कार्तिकेयरूप। 572-कुशलागमः- कल्याणदाता। 573-हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्- सुवर्ण के समान गौरवर्ण वाले तथा तेजस्वी। 574-नानाभूतरतः- नाना प्रकार के भूतों के साथ क्रीडा करने वाले। 575-ध्वनिः- नादस्वरूप। 576-अरागः- आसक्तिशून्य। 577-नयनाध्यक्षः- नेत्रों में द्रष्टारूप से विद्यमान। 578-विश्वामित्रः- सम्पूर्ण जगत् के प्रति मैत्री भावना रखने वाले मुनिस्वरूप। 579-धनेश्वरः- धन के स्वामी कुबेर। 580-ब्रह्मज्योतिः- ज्योतिःस्वरूप ब्रह्म। 581-वसुधामा- सुवर्ण और रत्नों के तेज से प्रकाशित अथवा वसुधास्वरूप। 582-महाज्योतिरनुत्तमः- सूर्य आदि ज्योतियों के प्रकाशक सर्वोत्तम महाज्योतिःस्वरूप। 583-मातामहः- मातृकाओं के

जन्मदाता होने के कारण मातामह। 584-मातरिश्वा नभस्वान्- आकाश में विचरण करने वाले वायुदेव। 585-नागहारधृक्- सर्पमय हार धारण करने वाले। 586-पुलस्त्यः- पुलस्त्य नामक मुनि। 587-पुलहः- पुलह नामक ऋषि। 588-अगस्त्यः- कुम्भजन्मा अगस्त्य ऋषि। 589-जातूकर्ण्यः- इसी नाम से प्रसिद्ध मुनि। 590-पराशरः- शक्ति के पुत्र तथा व्यास जी के पिता मुनिवर पराशर। 591- निरावरणनिर्वारः- आवरणशून्य तथा अवरोधरहित। 592-वैरंचयः- ब्रह्माजी के पुत्र नीललोहित रुद्र। 593-विष्टरश्रवाः- विस्तृत यशवाले विष्णुस्वरूप। 594-आत्मभूः- स्वयम्भू ब्रह्मा। 595-अनिरुद्धः- अकुण्ठित गति वाले। 596-अत्रिः- अत्रि नामक ऋषि अथवा गुणातीत। 597-ज्ञानमूर्तिः- ज्ञानस्वरूप। 598-महायशाः- महायशस्वी। 599-लोकवीराग्रणीः- विश्वविख्यात वीरों में अग्रगण्य। 600-वीरः- शूरवीर। 601-चण्डः- प्रलय के समान अत्यन्त क्रोध करने वाले। 602-सत्यपराक्रमः- सच्चे पराक्रमी। 603-व्यालाकल्पः- सर्पों के आभूषण से श्रृंगार करने वाले। 604-महाकल्पः- महाकल्पसंज्ञक कालस्वरूपवाले। 605-कल्पवृक्षः- शरणागतों की इच्छा पूर्ण करने के लिये

कल्पवृक्ष के समान उदार। 606-कलाधारः- चन्द्रकलाधारी। 607-अलंकरिष्णुः- अलंकार धारण करने वाले या कराने वाले। 608-अचलः- विचलित न होने वाले। 609-रोचिष्णुः- प्रकाशमान। 610-विक्रमोन्नतः- पराक्रम में सर्वोत्तम। 611-आयुः शब्दापतिः- आयु तथा वाणी के स्वामी। 612-वेगी प्लवनः- वेगशाली तथा कूदने या तैरने वाले। 613-शिशिसारथीः- अग्निरूप सहायक वाले। 614-असंसृष्टः- निर्लेप। 615-अतिथिः- प्रेमी भक्तों के घर पर अतिथि की भांति उपस्थित हो उनका सत्कार ग्रहण करने वाले। 616-शक्रप्रमाथी- इन्द्र का मान मर्दन करने वाले। 617-पादपासनः- वृक्षों पर या वृक्षों के नीचे आसन लगाने वाले। 618-वसुश्रवाः- यशरूपी धन से सम्पन्न। 619-हव्यवाहः- अग्निस्वरूप। 620-प्रतप्तः- सूर्यरूप से प्रचण्ड ताप देने वाले। 621-विश्वभोजनः- प्रलयकाल में विश्व-ब्रह्माण्ड को अपना ग्रास बना लेने वाले। 622-जप्यः- जपने योग्य नाम वाले। 623-जरादिशमनः- बुढ़ापा आदि दोषों का निवारण करने वाले। 624-लोहितात्मा तननूपात्- लोहितवर्ण वाले अग्निरूप। 625-बृहदश्वः- विशाल अश्ववाले। 626-नभोयोनिः- आकाश की उत्पत्ति के स्थान। 627-सुप्रतीकः- सुन्दर शरीर वाले। 628-तमिस्रहा-

अज्ञानान्धकारनाशक। 629-निदाघस्तपनः- तपने वाले ग्रीष्मरूप। 630-मेघः- बादलों से उपलक्षित वर्षारूप। 631-स्वक्षः- सुन्दर नेत्रों वाले। 632-परपुरंजयः- त्रिपुररूप शत्रुनगरी पर विजय पाने वाले। 633-सुखानिलः- सुखदायक वायु को प्रकट करने वाले शरत्कालरूप। 634-सुनिष्पन्नः- जिसमें अन्न का सुन्दर रूप से परिपाक होता है, वह हेमन्मकालरूप। 635-सुरभिः शिशिरात्मकः- सुगन्धित मलयानिल से युक्त शिशिर ऋतुरूप। 636-वसन्तो माधवः- चैत्र वैशाख- इन दो मासों से युक्त वसन्तरूप। 637-ग्रीष्मः- ग्रीष्म ऋतुरूप। 638-नभस्यः- भाद्रपदमासरूप। 639-बीजवाहनः- धान आदि के बीजों की प्राप्ति कराने वाला शरत्काल। 640-अंगिरा गुरुः- अंगिरा नामक ऋषि तथा उनके पुत्र देवगुरु बृहस्पति। 641-आत्रेयः- अत्रिकुमार दुर्वासा। 642-विमलः- निर्मल। 643-विश्ववाहनः- सम्पूर्ण जगत् का निर्वाह कराने वाले। 644-पावनः- पवित्र करने वाले। 645-सुमतिर्विद्वान्- उत्तम बुद्धिवाले विद्वान्। 646-त्रैविद्यः- तीनों वेदों के विद्वान अथवा तीनों वेदों के द्वारा प्रतिपादित। 647-वरवाहनः- वृषभरूप श्रेष्ठ वाहन वाले। 648-मनोबुद्धिरंहकारः- मन, बुद्धि और अहंकारस्वरूप। 649-क्षेत्रज्ञः- आत्मा। 650-क्षेत्रपालकः- शरीररूपी क्षेत्र का

पालन करने वाले परमात्मा। 651-जमदग्निः- जमदग्नि नामक ऋषिरूप। 652-बलनिधिः- अनन्त बल के सागर। 653-विगालः- अपनी जटा से गंगा जल को टपकाने वाले। 654-विश्वगालवः- विश्वविख्यात गालव मुनि अथवा प्रलयकाल में कालाग्निस्वरूप से जगत् को निगल जाने वाले। 655-अघोरः- अघोरस्वरूप। 656-अनुत्तरः- सर्वश्रेष्ठ। 657-यज्ञः श्रेष्ठः- श्रेष्ठ यज्ञरूप। 658-निःश्रेयसप्रदः- कल्याणदाता। 659-शैलः- शिलामय लिंगरूप। 660-गगनकुंदाभः- आकाशकुन्द-चन्द्रमा के समान गौर कान्तिवाले। 661-दानवारिः- दानव शत्रु। 662-अरिंदमः- शत्रुओं का दमन करने वाले। 663-रजनीजनकश्चारुः- सुन्दर निशाकररूप। 664-निःशल्यः- निष्कण्टक। 665-लोकशल्यधृक्- शरणागतजनों के शोक शल्य को निकालकर स्वयं धारण करने वाले। 666-चतुर्वेदः- चारों वेदों के जानने योग्य। 667-चतुर्भावः- चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कराने वाले। 668-चतुरश्चतुरप्रियः- चतुर एवं चतुर पुरुषों के प्रिय। 669-आम्नायः- वेदस्वरूप। 670-समाम्नायः- अक्षरसमाम्नाय-शिवसूत्ररूप। 671-तीर्थदेवशिवालयः- तीर्थों के

देवता और शिवालयरूप। 672-बहुरूपः- अनेक रूपवाले। 673-महारूपः- विराट् रूपधारी। 674-सर्वरूपश्चराचरः- चर और अचर सम्पूर्ण रूपवाले। 675-न्यायनिर्मायको न्यायी- न्यायकर्ता तथा न्यायशील। 676-न्यायगम्यः- न्याययुक्त आचरण से प्राप्त होने योग्य। 677-निरंजनः- निर्मल। 678-सहस्रमूर्द्धा- सहस्रों सिर वाले। 679-देवेन्द्रः- देवताओं के स्वामी। 680-सर्वशस्त्रप्रभंजनः- विपक्षी योद्धाओं के सम्पूर्ण शस्त्रों को नष्ट कर देने वाले। 681-मुण्डः- मुंडे हुए सिर वाले सन्यासी। 682-विरूपः- विविध रूपवाले। 683-विक्रान्तः- विक्रमशील। 684-दण्डी- दण्डधारी। 685-दान्तः- मन और इन्द्रियों का दमन करने वाले। 686-गुणोत्तमः- गुणों में सबसे श्रेष्ठ। 687-पिंगलाक्षः- पिंगल नेत्रवाले। 688-जनाध्यक्षः- जीवमात्र के साक्षी। 689-नीलग्रीवः- नीलकण्ठ। 690-निरामयः- नीरोग। 691-सहस्रबाहुः- सहस्रों भुजाओं से युक्त। 692-सर्वेशः- सबके स्वामी। 693-शरण्यः- शरणागत हितैषी। 694-सर्वलोकधृक्- सम्पूर्ण लोकों को धारण करने वाले। 695-पद्मासनः- कमल के आसन पर विराजमान। 696-परं ज्योतिः- परम प्रकाशस्वरूप। 697-पारम्पर्य्यफलप्रदः- परम्परागत फल की प्राप्ति कराने वाले। 698-पद्मगर्भः- अपनी नाभि से

कमल को प्रकट करने वाले विष्णुरूप। 699-महागर्भः- विराट् ब्रह्माण्ड को गर्भ में धारण करने के कारण महान् गर्भवाले। 700-विश्वगर्भः- सम्पूर्ण जगत् को अपने उदर में धारण करने वाले। 701-विचक्षणः- चतुर। 702-परावरज्ञः- कारण और कार्य के ज्ञाता। 703-वरदः- अभीष्ट वर देने वाले। 704-वरेण्यः- वरणीय अथवा श्रेष्ठ। 705-महास्वनः- डमरू का गम्भीर नाद करने वाले। 706-देवासुरगुरुर्देवः- देवताओं तथा असुरों से गुरु। 707-देवासुर नमस्कृतः- देवताओं तथा असुरों से वन्दित। 708-देवासुरमहामित्रः- देवता तथा असुरों दोनों के बड़े मित्र। 709-देवासुरमहेश्वरः- देवताओं और असुरों के महान् ईश्वर। 710-देवासुरेश्वरः- देवताओं और असुरों के शासक। 711-दिव्यः- अलौकिक स्वरूपवाले। 712-देवासुरमहाश्रयः- देवताओं और असुरों के महान् आश्रय। 713-देवदेवमयः- देवताओं के लिये भी देवतारूप। 714-अचिन्त्यः- चित्त की सीमा से परे विद्यमान। 715-देवदेवात्मसम्भवः- देवाधिदेव ब्रह्माजी से रुद्ररूप में उत्पन्न। 716-सद्योनिः- सत्पदार्थों की उत्पत्ति के हेतु। 717-असुरव्याघ्रः- असुरों का विनाश करने के लिये व्याघ्ररूप। 718-देवसिंहः- देवताओं में श्रेष्ठ। 719-दिवाकरः-

सूर्यरूप। 720-विबुधाग्रचरश्रेष्ठः- देवताओं के नायकों में सर्वश्रेष्ठ। 721-सर्वदेवोत्तमोत्तमः- सम्पूर्ण श्रेष्ठ देवताओं के भी शिरोमणि। 722-शिवज्ञानरतः- कल्याणमय शिवतत्त्व के विचार में तत्पर। 723-श्रीमान्- अणिमा आदि विभूतियों से सम्पन्न। 724-शिखिश्रीपर्वतप्रियः- कुमार कार्तिकेय के निवासभूत श्रीशैल नामक पर्वत से प्रेम करने वाले। 725-वज्रहस्तः- वज्रधारी इन्द्ररूप। 726-सिद्धखड्गः- शत्रुओं को मार गिराने में जिनकी तलवार कभी असफल नहीं होती। 727-नरसिंहनिपातनः- शरभरूप से नृसिंह को धराशायी करने वाले। 728-ब्रह्मचारी- भगवती उमा के प्रेम की परीक्षा लेने के लिये ब्रह्मचारी रूप में प्रकट होने वाले। 729-लोकचारी- समस्त लोकों में विचरण करने वाले। 730-धर्मचारी- धर्म का आचरण करने वाले। 731-धनाधिपः- धन के अधिपति कुबेर। 732-नन्दी- नन्दी नामक गण। 733-नन्दीश्वरः- नन्दी के ईश्वर। 734-अनन्तः- अन्तरहित। 735-नग्नव्रतधरः- दिगम्बर रहने का व्रत धारण करने वाले। 736-शुचिः- नित्यशुद्ध। 737-लिंगाध्यक्षः- लिंगदेह के द्रष्टा। 738-सुराध्यक्षः- देवताओं के अधिपति। 739-योगाध्यक्षः- योगेश्वर। 740-युगावहः- युग के निर्वाहक। 741-स्वधर्मा- आत्मविचाररूप धर्म में स्थित अथवा

स्वधर्मपरायण। 742-स्वर्गतः- स्वर्गलोक में स्थित। 743-स्वर्गस्वरः- स्वर्गलोक में जिनके यश का गान किया जाता है। 744-स्वरमयस्वनः- सात प्रकार के स्वरों से युक्त ध्वनि वाले। 745-बाणाध्यक्षः- बाणासुर के स्वामी अथवा बाणलिंग नर्मदेश्वर में अधिदेवतारूप से स्थित। 746-बीजकर्ता- बीज के उत्पादक। 747-धर्मकृद्धर्मसम्भवः- धर्म के पालक और उत्पादक। 748-दम्भः- मायामयरूपधारी। 749-अलोभः- लोभरहित। 750-अर्थविच्छम्भुः- सब के प्रयोजन को जानने वाले कल्याणनिकेतन शिव। 751-सर्वभूतमहेश्वरः- सम्पूर्ण प्राणियों के परमेश्वर। 752-श्मशाननिलयः- श्मशानवासी। 753-त्र्यक्षः- त्रिनेत्रधारी। 754-सेतुः- धर्ममर्यादा के पालक। 755-अप्रतिमाकृतिः- अनुपम रूप वाले। 756-लोकोत्तरस्फुटालोकः- अलौकिक एवं सुस्पष्ट प्रकाश से युक्त। 757-त्र्यम्बकः- त्रिनेत्रधारी अथवा त्र्यम्बक नामक ज्योर्तिलिंग। 758-नागभूषणः- नागहार से विभूषित। 759-अन्धकारिः- अन्धकासुर का वध करने वाले। 760-मखद्वेषी- दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करने वाले। 761-विष्णुकंधरपातनः- यज्ञमय विष्णु का गला काटने वाले।

762-हीनदोषः- दोषरहित। 763-अक्षयगुणः- अविनाशी गुणों से सम्पन्न। 764-दक्षारिः- दक्षद्रोही। 765-पूषदन्तभित्- पूषा देवता के दांत तोड़ने वाले। 766-धूर्जटिः- जटा के भार से विभूषित। 767-खण्डपरशुः- खण्डित परशुवाले। 768-सकलो निष्कलः- साकार एवं निराकार परमात्मा। 769-अनघः- पाप के स्पर्श से शून्य। 770-अकालः- काल के प्रभाव से रहित। 771-सकलाधारः- सब के आधार। 772-पाण्डुराभः- श्वेत कान्तिवाले। 773-मृडो नटः- सुखदायक एवं ताण्डवनृत्यकारी। 774-पूर्णः- सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा। 775-पूरयिता- भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने वाले। 776-पुण्यः- परम पवित्र। 777-सुकुमारः- जिनके सुन्दर कुमार हैं। 778-सुलोचनः- सुन्दर नेत्रवाले। 779-सामगेयप्रियः- सामगान के प्रेमी। 780-अक्रूरः- क्रूरतारहित। 781-पुण्यकीर्तिः- पवित्र कीर्तिवाले। 782-अनामयः- रोगशोक से रहित। 783-मनोजवः- मन के समान वेगशाली। 784-तीर्थकरः- तीर्थों के निर्माता। 785-जटिलः- जटाधारी। 786-जीवितेश्वरः- सब के प्राणेश्वर। 787-जीवितान्तकरः- प्रलयकाल में सबके जीवन का अन्त करने वाले। 788-नित्यः- सनातन। 789-वसुरेताः- सुवर्णमय

वीर्यवाले। 790-वसुप्रदः- धनदाता। 791-सद्गतिः- सत्पुरुषों के आश्रय। 792-सत्कृतिः- शुभ कर्म करने वाले। 793-सिद्धिः- सिद्धिस्वरूप। 794-सज्जातिः- सत्पुरुषों के जन्मदाता। 795-खलकण्टकः- दुष्टों के लिये कण्टकरूप। 796-कलाधारः- कलाधारी। 797-महाकालभूतः- महाकाल नामक ज्योतिर्लिंगस्वरूप अथवा काल के भी काल होने से महाकाल। 798-सत्यपरायणः- सत्यनिष्ठ। 799-लोकलावण्यकर्ता- सब लोगों को सौन्दर्य प्रदान करने वाले। 800-लोकोत्तर सुखालयः- लोकोत्तर सुख के आश्रय। 801-चंद्रसंजीवनः शास्ता- सोमनाथरूप से चन्द्रमा को जीवन प्रदान करने वाले सर्वशासक शिव। 802-लोकगूढ़ः- समस्त संसार में अव्यक्तरूप से व्यापक। 803-महाधिपः- महेश्वर। 804-लोकबंधुर्लोकनाथः- सम्पूर्ण लोकों के बंधु व रक्षक। 805-कृतज्ञः- उपकार को मानने वाले। 806-कीर्तिभूषणः- उत्तम यश से विभूषित। 807-अनपायोऽक्षरः- विनाशरहित अविनाशी। 808-कान्तः- प्रजापति दक्ष का अन्त करने वाले। 809-सर्वशस्त्रभृतां वरः- सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ। 810-तेजोमयो द्युतिधरः- तेजस्वी और कान्तिमान्। 811-लोकानामग्रणीः- सम्पूर्ण जगत् के लिये

अग्रगण्य देवता अथवा जगत् को आगे बढ़ाने वाले। 812-अणुः- अत्यन्त सूक्ष्म। 813-शुचिस्मितः- पवित्र मुस्कान वाले। 814-प्रसन्नात्मा- हर्ष भरे हृदय वाले। 815-दुर्जेयः- जिन पर विजय पाना अत्यन्त कठिन है। 816-दुरतिक्रमः- दुर्लङ्घ्य। 817-ज्योतिर्मयः- तेजोमय। 818-जगन्नाथः- विश्वनाथ। 819-निराकारः- आकाररहित परमात्मा। 820-जलेश्वरः- जल के स्वामी। 821-तुम्बवीणः- तूंबीं की वीणा बजाने वाले। 822-महाकोपः- संहार के समय क्रोध करने वाले। 823-विशोकः- शोकरहित। 824-शोकनाशनः- शोक का नाश करने वाले। 825-त्रिलोकपः- तीनों लोकों का पालन करने वाले। 826-त्रिलोकेशः- त्रिभुवन के स्वामी। 827-सर्वशुद्धिः- सबकी शुद्धि करने वाले। 828-अधोक्षजः- इन्द्रियों और उनके विषयों से अतीत। 829-अव्यक्तलक्षणो देवः- अव्यक्त लक्षणवाले देवता। 830-व्यक्ताव्यक्तः- स्थूल सूक्ष्म रूप। 831-विशाम्पत्तिः- प्रजाओं के पालक। 832-वरशीलः- श्रेष्ठ स्वभाववाले। 833-वरगुणः- उत्तम गुणों वाले। 834-सारः- सारतत्त्व। 835-मानधनः- स्वाभिमान के धनी। 836-मयः- सुखस्वरूप। 837-ब्रह्मा- सृष्टिकर्ता ब्रह्मा। 838-विष्णुः प्रजापालः- प्रजापालक विष्णु। 839-हंसः- सूर्यस्वरूप। 840-हंसगतिः- हंस

के समान चालवाले। 841-वयः- गरुड़ पक्षी। 842-वेधा विधाता धाता- ब्रह्मा, धाता और विधाता नामक देवतास्वरूप। 843-स्रष्टा- सृष्टिकर्ता। 844-हर्ता- संहारकारी। 845-चतुर्मखः- चार मुख वाले ब्रह्मा। 846-कैलासशिखरावासी- कैलास के शिखर पर निवास करने वाले। 847-सर्वावासी- सर्वव्यापी। 848-सदागतिः- निरन्तर गतिशील वायुदेवता। 849-हिरण्यगर्भः- ब्रह्मा। 850-द्रुहिणः- ब्रह्मा। 851-भूतपालः- प्राणियों का पालन करने वाले। 852-भूपतिः- पृथ्वी के स्वामी। 853-सद्योगी- श्रेष्ठ योगी। 854-योगविद्योगी- योगविद्याओं के ज्ञाता योगी। 855-वरदः- वर देने वाले। 856-ब्राह्मणप्रियः- ब्राह्मणों के प्रेमी। 857-देवप्रियो देवनाथः- देवताओं के प्रिय तथा रक्षक। 858-देवज्ञः- देवतत्त्व के ज्ञाता। 859-देवचिन्तकः- देवताओं का विचार करने वाले। 860-विषमाक्षः- विषम नेत्रवाले। 861-विशालाक्षः- बड़े-बड़े नेत्र वाले। 862-वृषदो वृषवर्धनः- धर्म का दान और वृद्धि करने वाले। 863-निर्ममः- ममतारहित। 864-निरहंकारः- अहंकारशून्य। 865-निर्मोहः- मोहशून्य। 866-निरुपद्रवः- उपद्रव या उत्पात से दूर। 867-दर्पहा दर्पदः- दर्प का हनन और खण्डन करने वाले। 868-दृप्तः- स्वाभिमानी।

869-सर्वर्तुपरिवर्तकः- समस्त ऋतुओं को बदलते रहने वाले। 870-सहस्रजित्- सहस्रों पर विजय पाने वाले। 871-सहस्रार्चिः- सहस्रों किरणों से प्रकाशमान सूर्यरूप। 872-स्निग्ध प्रकृतिदक्षिणः- स्नेहयुक्त स्वभाव वाले तथा उदार। 873-भूतभव्यभवन्नाथः- भूत, भविष्य और वर्तमान के स्वामी। 874-प्रभवः- सबकी उत्पत्ति के कारण। 875-भूतिनाशनः- दुष्टों के ऐश्वर्य का नाश करने वाले। 876-अर्थः- परमपुरुषार्थरूप। 877-अनर्थः- प्रयोजनरहित। 878-महाकोशः- अनन्त धनराशि के स्वामी। 879-परकार्यैक पण्डितः- पराये कार्य को सिद्ध करने की कला के एकमात्र विद्वान। 880-निष्कण्टकः- कण्टकरहित। 881-कृतानन्दः- नित्यसिद्ध आनन्दस्वरूप। 882-निर्व्याजो व्याजमर्दनः- स्वयं कपटरहित होकर दूसरे के कपट को नष्ट करने वाले। 883-सत्त्ववान्- सत्त्वगुण से युक्त। 884-सात्त्विकः- सत्त्वनिष्ठ। 885-सत्यकीर्तिः- सत्यकीर्तिवाले। 886-स्नेहकृतागमः- जीवों के प्रति स्नेह के कारण विभिन्न आगमों को प्रकाश में लाने वाले। 887-अकम्पितः- सुस्थिर। 888-गुणग्राही- गुणों का आदर करने वाले। 889-नैकात्मा नैककर्मकृत्- अनेक रूप होकर अनेक प्रकार के कर्म करने वाले। 890-सुप्रीतः- अत्यन्त प्रसन्न। 891-सुमुखः- सुन्दर

मुखवाले। 892-सूक्ष्मः- स्थूलभाव से रहित। 893-सुकरः- सुन्दर हाथ वाले। 894-दक्षिणानिलः- मलयानिल के समान सुखद। 895-नन्दिस्कन्धधरः- नन्दी की पीठ पर सवार होने वाले। 896-धुर्यः- उत्तरदायित्व का भार वहन करने में समर्थ। 897-प्रकटः- भक्तों के सामने प्रकट होने वाले अथवा ज्ञानियों के सामने नित्य प्रकट। 898-प्रीतिवर्धनः- प्रेम बढ़ाने वाले। 899-अपराजितः- किसी से पराजित न होने वाले। 900-सर्वसत्त्वः- सम्पूर्ण सत्त्वगुण के आश्रय अथवा समस्त प्राणियों की उत्पत्ति के हेतु। 901-गोविन्दः- गोलोक की प्राप्ति कराने वाले। 902-सत्त्ववाहनः- सत्त्वस्वरूप धर्ममय वृषभ से वाहन का काम लेने वाले। 903-अधृतः- आधाररहित। 904-स्वधृतः- अपने आप में ही स्थित। 905-सिद्धः- नित्यसिद्ध। 906-पूतमूर्तिः- पवित्र शरीरवाले। 907-यशोधनः- सुयश के धनी। 908-वाराहश्रृंगधृक्छृंगी- वाराह के दाढ़रूपी श्रृंगों को धारण करने वाले। 909-बलवान- शक्तिशाली। 910-एकनायकः- अद्वितीय नेता। 911-श्रुतिप्रकाशः- वेदों को प्रकाशित करने वाले। 912-श्रुतिमानः- वेदज्ञान से सम्पन्न। 913-एकबन्धुः- सबके एकमात्र सहायक। 914- अनेककृत्- अनेक प्रकार के पदार्थों की सृष्टि करने वाले।

915-श्रीवत्सलशिवारम्भः- श्रीवत्सधारी विष्णु के लिये मंगलकारी। 916-शान्तभद्रः- शान्त एवं मंगलस्वरूप। 917-समः- सर्वत्र समभाव रखने वाले। 918-यशः- यशस्वरूप। 919-भूशयः- पृथ्वी पर शयन करने वाले। 920-भूषणः- सबको विभूषित करने वाले। 921-भूतिः- कल्याणस्वरूप। 922-भृतकृत- प्राणियों की सृष्टि करने वाले। 923-भूतभावनः- भूतों के उत्पादक। 924-अकम्पः- कम्पित न होने वाले। 925-भक्तिकायः- भक्तिस्वरूप। 926-कालहा- कालनाशक। 927-नीललोहितः- नील और लोहितवर्णवाले। 928-सत्यव्रत-महात्यागी- सत्यव्रतधारी एवं महान् त्यागी। 929-नित्यशान्तिपरायणः- निरन्तर शान्त। 930-परार्थवृत्तिर्वरदः- परोपकारव्रती एवं अभीष्ट वरदाता। 931-विरक्तः- वैराग्यवान्। 932-विशारदः- विज्ञानवान्। 933-शुभदः शुभकर्ता- शुभ देने और करने वाले। 934-शुभनामा शुभः स्वयम्- स्वयं शुभस्वरूप होने के कारण शुभ नामधारी। 935-अनर्थितः- याचनारहित। 936-अगुणः- निर्गुण। 937-साक्षी अकर्ता- द्रष्टा एवं कर्तृत्वरहित। 938-कनकप्रभः- सुवर्ण के समान कान्तिमान्। 939-स्वभावभद्रः- स्वभावतः कल्याणकारी। 940-मध्यस्थः- उदासीन। 941-शत्रुघ्नः- शत्रुनाशक। 942-विघ्ननाशनः- विघ्नों

का निवारण करने वाले। 943-शिखण्डी कवची शूली- मोरपंख, कवच और त्रिशूल धारण करने वाले। 944-जटी मुण्डी च कुण्डली- जटा, मुण्डमाला और कवच धारण करने वाले। 945-अमृत्युः- मृत्युरहित। 946-सर्वदृक्सिंहः- सर्वज्ञों में श्रेष्ठ। 947-तेजोराशिर्महामणिः- तेजःपुंज महामणि कौस्तुभादिरूप। 948-असंख्येयोऽप्रमेयात्मा- असंख्य नाम, रूप और गुणों से युक्त होने के कारण किसी के द्वारा मापे न जाने वाले। 949-वीर्यवान् वीर्यकोविदः- पराक्रमी एवं पराक्रम के ज्ञाता। 950-वेद्यः- जानने योग्य। 951-वियोगात्मा- दीर्घकाल तक सती के वियोग में अथवा विशिष्ट योग की साधना में संलग्न हुए मन वाले। 952-परावरमुनीश्वरः- भूत और भविष्य के ज्ञाता मुनीश्वररूप। 953-अनुत्तमो दुराधर्षः- सर्वोत्तम एवं दुर्जय। 954-मधुरप्रियदर्शनः- जिनका दर्शन मनोहर एवं प्रिय लगता है। 955-सुरेशः- देवताओं के ईश्वर। 956-शरणम्- आश्रयदाता। 957-सर्वः- सर्वस्वरूप। 958-शब्दब्रह्म सतां गतिः- प्रणवरूप तथा सत्पुरुषों के आश्रय। 959-कालपक्षः- काल जिनका सहायक है। 960-कालकालः- काल के भी काल। 961-कंकणीकृतवासुकिः- वासुकि नाग को अपने हाथ में कंगन के समान धारण करने वाले। 962-महेष्वासः- महाधनुर्धर।

963-महीभर्ता- पृथ्वीपलक। 964-निष्कलंकः- कलंकशून्य। 965-विश्रृंखलः- बन्धनरहित। 966-द्युमणिस्तरणिः- आकाश में मणि के समान प्रकाशमान तथा भक्तों को भवसागर से तारने के लिये नौकारूप सूर्य। 967-धन्यः- कृतकृत्य। 968-सिद्धिदः सिद्धिसाधनः- सिद्धिदाता और सिद्धि के साधन। 969-विश्वतः संवृतः- सब ओर से माया द्वारा आवृत। 970-स्तुत्यः- स्तुति के योग्य। 971-व्यूढोरस्कः- चौड़ी छाती वाले। 972-महाभुजः- बड़ी भुजाओं वाले। 973-सर्वयोनिः- सबकी उत्पत्ति के स्थान। 974-निरातंकः- निर्भय। 975-नरनारायणप्रियः- नर नारायण के प्रेमी अथवा प्रियतम्। 976-निर्लेपो निष्प्रपंचात्मा- दोष सम्पर्क से रहित तथा जगत्प्रपंच से अतीत स्वरूपवाले। 977-निर्व्यंगः- विशिष्ट अंगवाले प्राणियों के प्राकट्य में हेतु। 978-व्यंगनाशनः- यज्ञादि कर्मों में होने वाले अंग वैगुण्य का नाश करने वाले। 979-स्तव्यः- स्तुति के योग्य। 980-स्तवप्रियः- स्तुति के प्रेमी। 981-स्तोता- स्तुति करने वाले। 982-व्यासमूर्तिः- व्यासस्वरूप। 983-निरंकुशः- अंकुशरहित स्वतंत्र। 984-निरवद्यमयोपायः- मोक्ष प्राप्ति के निर्दोष उपायरूप। 985-विद्याराशिः- विद्याओं के सागर। 986-रसप्रियः- ब्रह्मानन्द रस के प्रेमी।

987-प्रशान्तबुद्धिः- शान्त बुद्धिवाले। 988-अक्षुण्णः- क्षोभ या नाश से रहित। 989-संग्रही- भक्तों का संग्रह करने वाले। 990-नित्यसुन्दरः- सतत मनोहर। 991-वैयाघ्रधुर्यः- व्याघ्रचर्मधारी। 992-धात्रीशः- ब्रह्माजी के स्वामी। 993-शाकल्यः- शाकल्य ऋषिरूप। 994-शर्वरीपतिः- रात्रि के स्वामी चन्द्रमारूप। 995-परमार्थगुरुर्दत्तः सूरिः- परमार्थ तत्त्व का उपदेश देने वाले ज्ञानी गुरु दत्तात्रेयरूप। 996-आश्रितवत्सलः- शरणागतों पर दया करने वाले। 997-सोमः- उमासहित। 998-रसज्ञः- भक्तिरस के ज्ञाता। 999-रसदः- प्रेम रस प्रदान करने वाले। 1000-सर्वसत्त्वावलम्बनः- समस्त प्राणियों को सहारा देने वाले।।ॐ।।

एक समय दैत्यों का संहार करने के उद्देश्य से भगवान् विष्णु प्रतिदिन स्तुति एवं सहस्रनामों द्वारा शिव की कमल पुष्पों से अर्चना किया करते थे। एक दिन शिवजी की लीला से श्रीहरि की परीक्षा हेतु एक कमलपुष्प कम हो गया। नारायण ने एक कमलपुष्प की प्राप्ति के लिये समस्त भूमण्डल पर भ्रमण किया, परंतु शिव की लीला से उन्हें कहीं भी एक कमलपुष्प प्राप्त नहीं

हुआ। तब सुदृढ़ भक्त नारायण ने एक पुष्प की पूर्ति हेतु अपना कमल सदृश सुन्दर नयन ही निकालकर शिव को समर्पित कर दिया। नारायण के इस समर्पण भाव से शिव अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनके समक्ष प्रकट होकर उन्हें दस हजार सूर्यों के समान तेजस्वी सुदर्शन चक्र तथा कमलसदृश एक नेत्र भी प्रदान किया; उसी समय से भगवान् विष्णु को कमलनयन कहा जाता है। दिव्य सुदर्शन चक्र के प्रभाव से नारायण ने समस्त प्रबल दैत्यों का बिना परिश्रम के संहार कर दिया। इससे सारा जगत् स्वस्थ एवं सुखी हो गया तथा उस अमोघ आयुध को पाकर भगवान् विष्णु भी अत्यन्त प्रसन्न एवं सुखी हो गये।

भगवान् शिव ने विष्णु से कहा– जो लोग मेरी पूजा के साथ प्रतिदिन इस सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करेंगे या करवायेंगे, उन्हें स्वप्न में भी कोई दुःख नहीं होगा। राजाओं की ओर से संकट या विषम परिस्थिति में यदि मनुष्य सांगोपांग विधिपूर्वक इस सहस्रनाम स्तोत्र का सौ बार पाठ करे तो निश्चय ही सर्व कल्याण होगा। यह उत्तम स्तोत्र रोग व्याधि का नाशक और विद्या, धन और शिवभक्ति देने वाला तथा पुण्यजनक और सम्पूर्ण अभीष्ट फल प्रदान करने वाला है। जो नित्य मेरी पूजा

के पश्चात् मेरे समक्ष इसका भक्तिपूर्वक पाठ करता है, सिद्धियां उससे दूर नहीं रहती और अन्त समय वह साधक सायुज्य मोक्ष का अधिकारी होता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

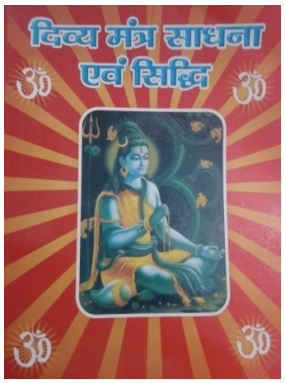

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

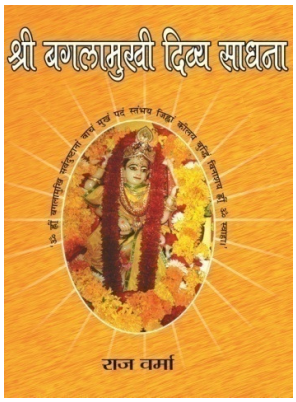
श्री बगलामुखी दिव्य साधना
राज वर्मा